P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

आचार्य नरेन्द्र देव के साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में विचार

शिखा अवस्थी
शोध छात्रा,
आगरा विश्वविद्यालय,
आगरा।

सारांश

आचार्य जी साम्प्रदायिकता के घोर विरोधी थे, उन्होंने सम्प्रदायवाद को राष्ट्रीयता और समाजवाद का सबसे बड़ा शत्रु माना है, और कहा कि बिना इस पर विजय पाये समाजवादी विचारो का निर्माण सम्भव नही है। ''सार्वजनिक जीवन में शुचिता वर्तमान समय की मांग है ऐसे ही महापुरूष है, आचार्य नरेन्द्र देव जी एक ही व्यक्ति में ज्ञान कर्म और साधन की त्रिवेणी एक साथ समाहित है।''[1] सदैव समाज की प्रगति ही उनके चिन्तन की विशेषता है।

मुख्य शब्द : साम्प्रदायिकता, साम्राज्यवाद, निरपेक्षता एवं राष्ट्रीयता

प्रस्तावना

साम्प्रदायिकता से उन्हें कितनी घृणा थी इसका अनुमान उनके इस कथन से लगाया जा सकता है, उन्होंने कहा कि ''मैने जीवन भर सम्प्रदाय के विरूद्ध डटकर संघर्ष किया और मै साम्प्रदायिक शक्तियों से लड़ने के लिये तैयार हूँ। किसी भी संगठन के साथ सहयोग करने को तैयार हूँ। उन्हे इस बात का गर्व था कि विद्या पीठ में कोई भी विद्यार्थी किसी साम्प्रदायिक संगठन का सदस्य नही है और वे अक्सर इसका उदाहरण दिया करते थे, वे सदैव अपने विद्यार्थियों को धर्म निरपेक्षता एवं राष्ट्रीयता की शिक्षा दिया करते थे, और उन्हें साम्प्रदायिकता रूपी विष के प्रभाव से अवगत करया करते थे। आचार्य जी साम्प्रदायिक संस्थाओं द्वारा राजनीति के हस्तक्षेप के कट्टर विरोधी थे, वे उन्हें आस्तीन का सांप कहते थे, उनके मत से इन संस्थाओं के नेतृत्व और दृष्टिकोण पर यूरोप की फॉसिस्ट विचार धारा को छाप है। साम्प्रदायिक संस्थाए भारत में फासिस्ट विचार धारा की प्रचार के अड्डे है। हिटलर की आर्य जाति की श्रेष्ठता के सिद्धान्त के नाम पर उनकी साम्प्रदायिक संस्थाए हिन्दू नव युवकों को नाजी विचार धारा की ओर आकर्षित कर रही है।

ऐसे हिन्दू महा सभावादी युवकों पर इस प्रचार का पर्याप्त असर पड़ा जो यह समझने में असमर्थ है कि फॉसिज्म साम्राज्यवाद का ही बढ़ा हुआ रूप है। इसी प्रकार कुछ लोग मुस्लमानों की वीरता का प्रचार कर ब्रिटेन की फिलिस्तीन नीति को लेकर उन्हे नाजीवादी तरीकों से संगठित कर रहे है। आचार्य जी ने इस रहस्य का उद्घाट्न किया कि साम्प्रदायिक संस्थायें निहित हितों की रक्षा के लिये राजनीति के अखाड़े में उतरी है। उनके शब्दों में कहने को ''हिन्दू सभा और मुस्लिम लीग आदि साम्प्रदायिक संस्थाओं का उद्देश्य अपने सम्प्रदाय के सर्वसाधारण लोगो की भलाई के लिये प्रयत्न करना रहा है, पर यदि इन संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले कार्य पर ध्यान दे तो हमें पता चलेगा कि व्यवहार रूप में ये संस्थाए मुठ्ठी भर सांमतीराजाओं तालुकेदारो जमीदारो और शहर के कुछ अनुदार मध्यम श्रेणी के लोगो की संस्थाएं रही जो धर्म के नाम पर अपने वर्ग का स्वार्थ साधन करके सरकारी नौकरियों और एसेम्वली में सीटे आदि प्राप्त केस के काम मे लायी जाती है।' आचार्य जी के व्यक्तित्व के बारे में कहा जाता है। ''उनकी अभिव्यक्ति उतनी सरल सहज तथा सुबोध होती थी कि उनका प्रभाव पड़े बिना नही रहता था।''[2] इस प्रकार से आचार्य जी का चिन्तन पूर्णतः मानवतावायी एंव राष्ट्र वादी था। जिसकी पूरी झलक उनके राजनीतिक विचारों में दिखायी देती है। जैसा कि उस समय साम्प्रदायिक संस्थाए निहित व हितों की रक्षा कवच के रूप में कार्य कर रही थी, नरेन्द्र जी पूर्णतः अहिंसा के पक्ष में नही थे। उनका मानना था कि ''एक मात्र अहिंसा से स्वराज की प्राप्ति नही हो सकती है। अन्याय के विरोध में हिंसा का प्रयोग आवश्यक हो सकता है।''[3] 1937 में जब अनेक प्रान्तों में काग्रेस शासन सत्ता में आ गयी तभी से संस्थायें सक्रिय हो गयी थी, कांग्रेस सरकारकिसानों मजदूरों साधारण जनता की आर्थिक व्यवस्था की सुधार के लिये जो कानून पास कर रही है उसके इन वर्गो की सुविधाओं पर चोट पहुँच रही है। उसके बाद से

ही यह संस्थायें जो पहले अपने आपको धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाए घोषित करती थी, अपने असली रंग में आ गई थी, आचार्य जी ने बताया कि ब्रिटिश सरकार भी परोक्ष रूप से इसकी मद्द कर रही थी, क्यो कि वह समझती थी कि भारत में जो समाजवाद का प्रसार हो रहा है। उसके असर को दूर करने के लिये यह आवश्यक था, इस प्रकार आचार्य नरेन्द्रदेवने साम्प्रदायिकता के पीछे भी आर्थिक कारणो की खोज की है। जो उनके मार्क्सवादी झुकाव को प्रर्दशित करती है।[4]

आचार्य जी ने साम्प्रदायिकता को जनतंत्र एवं स्वस्थ राजनीतिक विचारधार के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा माना 29 दिसम्बर 1955 को प्रजा सेसलिस्ट पार्टी के गया अधिवेशन में आचार्य नरेन्द्र देव जी ने अपने विचार रखते हुये कहा था'' हमारे कर्तव्य है। कि मानव स्वभाव में उपलब्ध जनतानितक और समाजवादी तत्वों के रचनात्मक समन्वय द्वारा समाजवादी नैतिकता का निर्माण इस तरह करें कि ''आध्यात्मिक मानववाद को ऊँच–नीच वाले धार्मिक सामाजिक आधार से अलग रखा जाये'' आपके चिन्तन की धारणा मूल मानवाता वाद ही थी।''[5] पटना अधिवेशन में अध्यक्ष पद से बोलते हुये उन्होंने सम्प्रदायवाद को प्रजा तंत्र का सबसे बड़ा शत्रु बताया और प्रजातंत्रात्मक जीवन प्रणाली को सफल बनाने के लिये इसके उन्मूलन को अनिवार्य बताया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि साम्प्रदायिकता के फलस्वरूप हमारी राजनीतिक विचार धारा विकृत हो रही है। ''धर्म रिरपेक्ष राष्ट्र वाद के पूरक के रूप में उनहोंने एक नवीन विचार भारतीय धर्म का प्रतिपदान किया।[6] जिसमें आज के विधि धर्मो ने सम्प्रदाय विशेष की स्थित प्राप्त कर ली'' उन्होंने साम्प्रदायिकता को राष्ट्रप्रगति में एक रोड़ा माना क्येांकि ऐसी मासिकता से हमारा दृष्टिकोण संकुचित हो जाता है और हम राष्ट्र व्यापी दृष्टिकोण में नही सेाच पाते। आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रीयता जनतंत्र व समाजवाद के आधार पर देश के पुनः निर्माणके कार्य को पूरा करने के लिये समर्पित था।''[7]

साम्प्रदायिकता की भावना के कारण हमारा राजनीतिक चिन्तन अस्त व्यस्त और हमारी उदार भावनायें सकुचित हो गयी है। उन्होंने साफ कहा साफ कहा था कि साम्प्रदायिकता का मतलब है। फिरका परस्ती की ओर लौट जाना और उस मायने में हम राष्ट्रीयता की तिलांजलि दे देते है।'' 3 जून 1947 को ब्रिटिश सरकार की ओर से हो घोषण की गई थी कि 15 अगस्त 1947 को भारत वर्ष दो भागो में विभक्त हो जायेगा।''[8]

इस प्रकार से मानों ब्रिटिश सरकार साम्प्रदायिकता के अंकुर पिरो रही थी। 2 अप्रैल 1950 को सोशलिस्ट पार्टी के पंजाब शाख के सम्मेलन में अध्यपक्षीय पद से भाषण देते हुये उन्होंने साम्प्रदायिक विद्वेष की भर्तसना की। उन्होंने यही अपील की थी प्रगतिशील शक्तियाँ इसके विरूद्ध संघर्षरत रहे। साम्प्रदायिकता का मुकाबला कैसे किया जाये, आचार्य जी का मानना था'' समाज में जो पूँजीपतियों का वर्ग स्थित है। उसकी बदौलत अधिकार के सभी स्थानों पर पूँजीपतियों का एकाधिपत्य स्थापित हो जाता है। ''पूँजीवादी अधिकारी कितना ही निष्पक्ष होने की कोशिश क्यों न करे लेकिन स्वभावतः उसका दृष्टिकोण अपने वर्ग स्वार्थ से रंगा होता है।''[9]

समाज से साम्प्रदायिकता के अंकुर फूटने से पूर्व ही उन्हें समाप्त किया जाये इसके लिये आचार्य जी ने जो दृष्टिकोण अपनाया वह राष्ट्रीय आन्दोलन की परम्परा से सर्वथा भिन्न है और मेरी दृष्टि में यह आचार्य नरेन्द्र देव की

भारतीय राजनीतिक की महत्व पूर्ण देन है, आचार्य जी ने बताया चूंकि साम्प्रदायिकता की समस्या की जड़ में आर्थिक त्व है। अतः आर्थिक तत्व के आधार पर हम इस समस्या का समाधान कर सकते है। आर्थिक कार्यक्रम के आधार पर जनात का विश्वास प्राप्त किया जाये और जनता की जनतान्त्रिक मनोवृत्ति को प्राप्त करके साम्प्रदायिक संसथाओं की प्रतियोगिता का मुकाबला किया जा सकता है और उनकी शक्ति को झीण किया जा सकता है। आर्थिक मसलो पर संघर्ष करे हम आम जनता की सहानुभूति प्राप्त कर सकते है। उसकी वास्तविक चेतना का विकास कर सकते है। और व्यवहार रूप में यह दिखा सकते है कि आज जो ''साम्प्रदायिक नेता उसके पक्षधर बन रहे है। वे सच्चे सवालों को समाने आने पर भाग खड़े होते है, क्यों कि उनका वास्तविक उद्देश्य अपने वर्ग का स्वार्थ साधान करता होता है''[10]

आचार्य जी का मत था कि राजनैतिक सभी कारणों से हिन्दु मुस्लिम एकता की समस्या को समाप्त नही किया जा सकता साम्प्रदायिक संस्थाओं के उदय से ही हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित की जाती रही । अतः आचार्य नरेन्द्र देव जी का मुख्य कार्य था'' अपनी विद्वताशील स्वाधीनता के प्रतिष्ठित क्रान्तिकारी भावना और राष्ट्र सेवा के बल पर उन्होंने इस कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न किया और अपने प्रान्त की काग्रेस को अपने नेतृत्व से विशेषतौर से प्रभावित किया।[11]

काग्रेस जैसी धर्म निरपेक्ष पार्टी ने हिन्दू मुस्लिम पार्टी को राजनैतिक समझौते के प्रयास से जोड़ने का कार्य किया, किन्तु ठीक इसके विपरीत परिणाम निकल कर आये, एकता नही बल्कि अलगाववाद की भावना का विकास हुआ एसोसिएटेड प्रेस आफ इण्डिया को लखनऊ में 22 जून 1945 को दिये गये एक साक्षात्कार में उन्होंने का था कि काग्रेस लींग एकता को हिन्दू मुस्लिम एकता के बराबर बताना धोखा है। उन्होंने कहा कि समान आर्थिक हितों के मसलो को लेकर संघर्ष करने पर ही यह एकता स्थापित की जा सकती है।'' उनके शब्दों में समझौते अस्थायी उद्देश्यों को सिद्ध करने के लिये अस्थायी उपाय होते है। जनसंख्या की अदला बदजली के बिना पाकिस्तान से या न बने साम्प्रदायिक समस्या को सुलझाना ही पड़ेगा और वह इस तरह सुलझ सकती है कि देश की हिन्दू मुस्लिम जनता पर समान रूप से असर डालने वाले आर्थिक मसलों परजो दिया जाये। उकने आर्थिकहित एक से है और सामान हितों के आधार पर एकता स्थापित की जा सकती है। सामान आर्थिक हितों के लिये सम्मिलित संघर्ष करने से ही उनमे एकता की जड़े जमेगी।

मेरी दृष्टि में साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में आचार्य नरेन्द्र देव के विचार भारतीय राजनीतिक चिन्तन की मौलिक से है। उन्होंने साम्प्रदायिकता की समस्या को नवीन दृष्टिकोण से देखा और उसके हल के लिये सवर्था सुझाव दिये साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में आपके विचार अन्य भारतीय नेताओंसे भिन्न थे। आपके बारे में अन्य विचरक

कहते है कि ''आप बड़े दानी प्रकृति और सातविक प्रकृति के वेदान्त में आपकी गहरी रूचि थी। वेदों का आपको अच्छा ज्ञान प्राप्त था।[12] जिसकी झलक हमें भारतीय राजनीतिक चिन्तन की पृष्ठ भूमि में दिखायी देती है।

आचार्य जी का मत था कि साम्प्रदायिकता के पीछे निहित स्वार्थ की भावनायें है। सामंती और पूंजीवादी तत्व आपने स्वार्थ साधन के लिये साम्प्रदायिकता का जहर उत्पन्न करते है। वे साम्प्रदायिकता को जनतन समाजवाद एक राष्ट्रीता का सबसे बड़ा शत्रु मानते है। चूंकि आचार्य जी साम्प्रदायिकता के मूल में आर्थिक तत्व देखते थे। अतः उनका विचार था कि आर्थिक कार्यक्रम के आधार पर ही इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि राजनीतिक सभी कारणों जैसे (कांग्रेस लीग पैक्ट 1916) से हिन्दू मुस्लिम एकता नही उत्पन्न की जाती और यदि इस प्रकार की एकता उत्पन्न की गई तो यह दिखावटी और अस्पष्ट होगी उनके मत से आर्थिक कार्यक्रम के आधार पर जन साधरण का विश्वास प्राप्त किया जा सकता है। उनमें वास्तविक चेतना विकसित हकी जा सकती है और आर्थिक मसलो पर संघर्ष करके हम आम जनता में चेतना पैदा कर सकते है।

सन्दर्भ

1. केसकर, बी.वी. – आचार्य नरेन्द्र देव (स्मृति ग्रंथ) में श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का लेख, 1971, पृष्ठ–160।
2. चतुर्वेदी नर्मदेश्वर– नवसंस्कृति उन्नायक एवं समाजवादी व्याख्याता, पृष्ठ–15।
3. मित्तल सत्य प्रकाश– आचार्य नरेन्द्र देव और राष्ट्रीय जीवनचरित्र, परिवार और बचपन नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ –24।
4. मित्तल सत्य प्रकाश – राष्ट्रीय जीवन चरित्र आचार्य नरेन्द्र देव नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया 2001, पृष्ठ–87।
5. नेहरू जवाहर लाल– आचार्य नरेन्द्र देव विचार और दृष्टि उपाध्याय, गोपाल सम्पदाक उत्कर्ष प्रकाशन लखनऊ, पृष्ठ –270।
6. आचार्य नरेन्द्र देव – राष्ट्रीयता और समाजवाद (द्वितीय संस्करण), पृष्ठ–232।
7. उपाध्याय गोपाल– अजात शत्रु आचार्य नरेन्द्र देव विचार और दृष्टि उत्कर्ष प्रकाशन लखनऊ, पृष्ठ–7।
8. लाल मुकुट बिहारी– भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1978, पृष्ठ–421।
9. Keshva, B.V. & Menon V.K. Ni: Acharya Narendra Deo a Communoration Volume NatioanlBook Turst of India, New Delhi, 1971 pp- 29.
10. सिंह भगवती शरण– विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी आधुनिक भारत के निर्माता– आचार्य नरेन्द्र देव प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1991, पृष्ठ–19।
11. मेहर अली युसुफ – समाजवाद और राष्ट्रीय क्रान्ति 1948, पृष्ठ–117
12. मावे प्रभाकर एं दफ्तुआर सुरेन्द्र नाथ– आधुनिक भारत के विचारक आचार्य नरेन्द्र देव, पृष्ठ –127